Regn. No. 1537/2021

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥

प्रभु सेवा परिवार

इंडिया ट्रस्ट एक्ट, 1882 के तहत निगमित एक धार्मिक ट्रस्ट
पंजिकरण संख्या 1537/2021

स्मारिका 2026





पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार
Mob.: +91- 9839639952

प्लॉट नंबर 30 वरूण एन्क्लेव, ग्रेटर नोएडा
8808836666, 9100002155
prabhusewaparivar@gmail.com
prabhusewaparivar.com
YouTube Sant Ramesh Bhai Sukla

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम् मलय़ज शीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम् । वन्दे मातरम् ।।1।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,

सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम् ।।2।।
कोटि–कोटि कण्ठ कल–कल निनाद कराले,
कोटि–कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,

रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम् ।।3।।
तुमि विंद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे–मन्दिरे ।

वन्दे मातरम् ।।4।।
त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम्, अमलाम् अतुलाम्,

सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम् ।।5।।
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्

धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम् ।।6।।

Regn. No. 1537/2021

स्मारिका : 2026

संस्थापक:
पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी

राष्ट्रीय अध्यक्ष:
श्री सतीश श्रीवास्तव

सम्पादक:
श्रीमती सोनल खरे

प्रकाशक
प्रभु सेवा परिवार (पंजी.)
प्लाट संख्या-30, वरूण इंक्लेव
ग्रेटर नोयडा-201310
फोन- +91- 9839639952,
+91- 8808836666
ई-मेल: prabhusewaparivar@gmail.com

स्मारिका: 2025 में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण, सम्बन्धित लेखकों/सामग्री प्रदाताओं के हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक या मुद्रक का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है। यह पत्रिका केवल निजी वितरण के लिए है।

अनुक्रमणिका

प्रभु सेवा परिवार का गीत.....01
प्रभु सेवा परिवार एक परिचय.....02
पूज्य संत श्री रमेश भाई शूक्ल–एक परिचय.....03
संस्थापक का संदेश.....04
संरक्षक का संदेश.....05
राष्ट्रीय अध्यक्ष का संदेश.....06
सम्पादकीय.....07
गत वर्ष आयोजित धार्मिक यात्राये एवं कथाये.....8–13
जन्म लाभ.....14, 15
भगवत गीता सूत्र.....16
मानस – नारी शक्ति.....17
कुंभ तेरे जाने के बाद.....18
बुजुर्गो पर लेख.....19
अहल्या – वो पत्थर नही, धैर्य की देवी थी.....20
प्रभु सेवा परिवार (अध्यात्मोन्मुख).....21
हमारे सदस्यगण.....22–26
सम्मानित सदस्य गण.....27–29
बैलेन्स सीट.....30
दान दाताओं के नाम.....31

प्रभु सेवा परिवार का गीत

(1)

हमारा प्रभु सेवा परिवार।
प्रभु के भक्तों का परिवार।।

राम कथा भागवत कराता,
सबको तीरथ धाम घुमाता।
कथा सुनें सब तीरथ करके,
हो जावें भवपार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

निर्धन दीन जनों की सेवा,
गो सेवा और प्रभु की सेवा।
सेवा जिसका मूल मंत्र है,
करता पर उपकार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

एक बनें हम, नेक बनें हम,
मानवता के काम करें हम।
यही हमारा सत्प्रयास है,
श्रेष्ठ बने संसार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

(2)

हमारा प्रभु सेवा परिवार ।
प्रभु के भक्तो का परिवार ।।

ये जग प्रभु का रूप है प्यारा,
जग सेवा ही मंत्र हमारा ।
दीन जनों की सेवा निसदिन दीन जनो से प्यार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार ।।

सेवा सबसे बड़ा धर्म है,
सेवा ही तप है, सुकर्म है।
सेवा सबसे बड़ी है पूजा सृष्टि का आधार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

आओ हम सब हाथ बढायें,
सेवा यज्ञ को सफल बनायें ।
जग सेवा प्रभु सुमिरन करके हो जाये भव पार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार ।।

प्रभु सेवा परिवार - एक परिचय

संस्थापक
श्री रमेश भाई शुक्ल
मो० 9839639952

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री सतीश श्रीवास्तव
मो० 8808836666

संरक्षक
श्री सत्यप्रकाश राय
से० नि० अपर जिलाधिकारी
मो० 6387239996

राष्ट्रीय महासचिव/कोषाध्यक्ष
श्री अभिषेक श्रीवास्तव
मो० 9582435770

स्थापना : 15 सितम्बर वर्ष 2021
पंजीकरण संख्या : 1537 / 2021
ट्रस्ट पंजीकरण एक्ट : इण्डिया ट्रस्ट एकट 1882 के तहत पंजीकृत
आयकर अधिनियम : आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12 A और 80 G के तहत पंजीकृत

उद्देश्य :

(1) जनमानस का कल्याण : प्रभु सेवा परिवार का मुख्य उद्देश्य जनमानस का कल्याण करना है और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु तीर्थ यात्राओं, सत्संग धार्मिक कथाओं, भागवत् कथा आदि का आयोजन ट्रस्ट द्वारा समय–समय पर कराया जाना।
(2) सनातन धर्म व संस्कृति का प्रसार : सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार हेतु धार्मिक स्थलों (मन्दिरों) एवं धार्मिक संस्थानो को दान देना ।
(3) गौ सेवा करना : गौमाता की सेवा हेतु धनराशि उपलब्ध कराना जिसके द्वारा गौ शालाओं का रख–रखाव भली भांति किया जा सके एवं गौमाता का संरक्षण एवं सेवा हो सके।
(4) निर्धनों का सहयोग : निर्धनों की दैनिक आवश्यकताओं (भोजन, वस्त्र आदि) की पूर्ति हेतु वित्तीय सहयोग प्रदान करना।
(5) वंचित वर्ग का सहयोग : वंचित वर्ग के सहयोग हेतु वृद्धाश्रम, अनाथालय एवं औषधालयों की स्थापना एवं संचालन में सहयोग करना।
(6) अन्य धार्मिक संस्थानों का सहयोग : अन्य धार्मिक संस्थान यदि समाज हित में संलग्न होकर कोई आयोजन करता है तो उस धार्मिक आयोजन से सहभागी बनकर सहयोग प्रदान करना ।
(7) निर्धन विद्यार्थियों के लिए सहयोग : वह कुशल निर्धन विद्यार्थी जो पुस्तक नोट बुक आदि की व्यवस्था करने में अक्षम हैं उनकी शिक्षा की व्यवस्था हेतु सहयोग करना।
(8) शिक्षा, स्वच्छता के प्रति जागरूकता : अशिक्षित नागरिकों में शिक्षा के महत्व को समझाना एवं स्वच्छता का महत्व बताना साथ ही गन्दगी से होने वाली बीमारियों एवं उससे बचाव पर चर्चा करना ।

प्रभु सेवा परिवार की प्रेरणा का मुख्य स्रोत स्वामी विवेकानन्द जी का यह विश्व व्यापी विचार है ।
अज्ञानी लोग जिसे मनुष्य कहते है, मैं उस नारायण का सेवक हूँ। अर्थात् 'नर सेवा – नारायण सेवा'

इस ट्रस्ट का एकमेव उद्देश्य प्रत्येक उस व्यक्ति का हर सम्भव स्तर पर सहयोग करना है जो मानवीय मूल्यों के आधार पर सहयोग आकांक्षी है। प्रभु सेवा परिवार 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से कार्य करते हुए निः स्वार्थ भाव से वंचित वर्ग की सेवा हेतु तन मन धन से तत्पर है। इसके साथ–साथ यह प्रभु सेवा परिवार प्रत्येक व्यक्ति में उच्च मानवीय मूल्यों एवं आध्यात्मिकता का विकास करते हुए देश हित में सभ्य नागरिको के निर्माण में सहयोग कर रहा है। अर्थात् प्रभु सेवा परिवार जन कल्याण एवं सामाजिक कल्याण के लिए पूर्णतः समर्पित है।

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल- एक परिचय



परम पूज्य सन्त श्री रमेश भाई शुक्ल जी का जन्म ज्येष्ठ मास की कृष्ण चतुर्थी 1973 में शारदा नदी के तट पर स्थित पचपेड़ी ग्राम जिला लखीमपुर खीरी उत्तर प्रदेश में हुआ है। गुरूजी के माताजी श्रीमती सुधालता सात्विक गृहणी हैं और पिताजी स्व० श्री ऋषि नाथ प्रसाद शुक्ल जो कि अध्यापक रहे और साठ साल की उम्र तक अध्यापक का कार्य किया। वे बहुत ही भगवत प्रेमी व्यक्तित्व के धनी थे।

गुरूजी की बचपन से रूचि हिन्दू शास्त्र के बारे में जानने और शोध करने की थी, उन्होंने हमेशा अपना समय उसी लिए समर्पित किया। वर्ष 1996 में स्नातकोत्तर की शिक्षा पूरी करने के बाद शिशु मन्दिर में आचार्य के पद पर कार्य कियें। उसी वर्ष गुरूजी का विवाह श्रीमती ज्योत्सना देवी के साथ हुआ जो कि एक आदर्श धर्मपत्नी एवं कुशल गृहणी के रूप में साथ निभा रही हैं। गुरूजी के दो सन्तान–एक पुत्री एवं एक पुत्र हैं जो अभी शिक्षण कार्य कर रहे हैं।

लगभग तीन साल शिक्षण कार्य करने के बाद वर्ष 2000 में अन्ततः उन्हें भगवान की कृपा प्राप्त हुई और गुरूजी ने प्रभु की सेवा रामचरित मानस, भागवत कथा, शिव कथा एवं हनुमान कथा का आध्यात्मिक अध्ययन करके, कथा के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करने के उद्देश्य से आगे बढ़े तब से निरन्तर प्रभु की सेवा में लगे हैं। वे भगवान की कथाओं के माध्यम से समाज में हिन्द संस्कृति के मल्यों का प्रसार करना समाज में फैली करीतियों को खतम करने का प्रयास कर रहे हैं।

गुरूजी ने शास्त्रों का अध्ययन किया, इसके अलावा उन्होंने सभी हिन्दू शास्त्रों के साथ अन्य धर्मों के बारे में भी अध्ययन किया। यूट्यूब, फेसबुक और टी॰वी॰ चैनलों और अन्य सोशल मीडिया के माध्यमों से वह लोगों के सामने श्रीराम कथा, श्रीमद्भागवत कथा, हनुमान कथा एवं शिव कथा का बहुत ही सरल शब्दावली में आध्यात्मिक एवं तार्किक व्याख्या करके लोगों में भगवत भक्ति का प्रचार करते हैं और काफी लोग उनका अनुसरण कर रहे हैं।

गुरूजी के कार्यों की बात करें तो वह एक अच्छे कथा वाचक हैं और अपनी कथा के माध्यम से लोगों को अच्छे रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि देश एवं समाज का अच्छा विकास हो, लोगों के सोच में भगवान की भक्ति हो। अपनी कथा में वह हमेशा लोगों को भक्ति के मार्ग पर चलने की सलाह देते हैं ताकि उन्हें एक अच्छा जीवन जीने का अवसर मिल सके।

गुरूजी ने लोगों के अन्दर प्रभु की भक्ति का संचार होता रहे, इसी के लिए प्रभु सेवा परिवार ट्रस्ट का गठन 15/09/2021 को किया। गुरूजी प्रभुसेवा परिवार के संस्थापक हैं और इस ट्रस्ट के माध्यम से भारत में या भारत के बाहर पवित्र स्थानों में विभिन्न कथाओं का संचालन कर रहे है। गुरूजी गरीब असहाय एवं जरूरतमंदों का सहारा भी बन रहे हैं और ट्रस्ट के माध्यम से उन्होंने जरूरतमंदों की सहायता के लिए विभिन्न कार्यकमों का आयोजन किया है।

गुरूजी का निवास स्थान और सम्पर्क सूत्र इस प्रकार हैः–

प्रभु सेवा धाम, 7/633 A, विकास नगर, लखनऊ। मोबाइलः 9839639952

संस्थापक का संदेश

Regn. No. 1537/2021



पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक
प्रभु सेवा परिवार

पाँच वर्ष का हो गया प्रभु सेवा परिवार ।
और बढ़े फूले फले जग में हो विस्तार ।।

जग में हो विस्तार बहे सेवा की धारा ।
प्रभु सेवा परिवार करे जग में उजियारा ।।

आप सभी पर नित कृपा करते रहें महेश ।
यही कामना हृदय से करता नित्य रमेश ।।

एक संत कह रहे थे –

राष्ट्र में राम राज्य लाना है तो हर व्यक्ति को पाँच सेवा नित्य करनी चाहिए ।

1. देह सेवा – आसक्त होकर नहीं पर ये साधन धाम है इसको संभालना होगा ।
2. दिल सेवा – हमारा दिल भी अच्छा हो शरीर ठीक हो पर दिल की भावनायें गंदी हों ये ठीक नहीं ।
3. देव सेवा – अपने इष्ट देव अपने गुरूदेव की सेवा ।
4. देश सेवा – देश भगवान का स्वरूप है इस भाव से सेवा करें ।
5. दीन सेवा – दीन दुखियों की सेवा । नर सेवा नारायण सेवा ।

ये पाँच सेवायें करने का संकल्प हर व्यक्ति ले ले तो बहुत शीघ्र राष्ट्र में रामराज्य आ सकता है।

रमेश भाई शुक्ल

संस्थापक
प्रभु सेवा परिवार

संरक्षक का संदेश

Regn. No. 1537/2021

श्री सत्य प्रकाश राय
संरक्षक
प्रभु सेवा परिवार



।। ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

सादर प्रणाम ।

प्रभु सेवा परिवार के पंचम स्थापना दिवस के पावन अवसर पर परिवार के प्रत्येक सदस्य को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

किसी भी संस्था की वास्तविक पहचान उसके भवन, संसाधनों अथवा गतिविधियों से नहीं, बल्कि उससे जुड़े लोगों की निष्ठा, अनुशासन और विचारों की पवित्रता से बनती है। पाँच वर्षो की अवधि में प्रभु सेवा परिवार ने अपने लिए एक ऐसी पहचान निर्मित की है, जिसमें आध्यात्मिक चेतना के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव दिखाई देता है।

आज आवश्यकता केवल सेवा कार्यो की संख्या बढ़ाने की नहीं, बल्कि सेवा की गुणवत्ता, निरंतरता और प्रभाव को बढ़ाने की है। हमारा प्रत्येक प्रयास किसी व्यक्ति के जीवन में आशा, विश्वास और आत्मसम्मान का संचार करे– यही हमारी सार्थकता होनी चाहिए ।

संस्था से जुड़े प्रत्येक सदस्य को यह अनुभव होना चाहिए कि वह केवल किसी संगठन का हिस्सा नहीं, बल्कि एक ऐसी सामूहिक सोच का सहभागी है जो मानवीय मूल्यों, भारतीय संस्कृति और सामाजिक सद्भाव को मजबूत करने के लिए कार्यरत है। हमारी नई पीढ़ी भी इस भावना से जुड़े और सेवा को अपने जीवन के संस्कार के रूप में स्वीकार करे, यह समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

आने वाला समय हमारे लिए और अधिक उत्तरदायित्व लेकर आएगा मेरा विश्वास है कि आपसी सहयोग, पारदर्शिता और सकारात्मक सोच के साथ प्रभु सेवा परिवार अपनी गतिविधियों को नए आयाम देगा तथा समाज में रचनात्मक परिवर्तन का माध्यम बनेगा ।

परमात्मा से मेरी प्रार्थना है कि परिवार के सभी सदस्यों को सद्बुद्धि, सामर्थ्य और निरंतर सेवा की प्रेरणा प्राप्त हो तथा यह परिवार आने वाले वर्षो में और अधिक सशक्त, संगठित एवं समाजोपयोगी बने ।

।। पंचम स्थापना दिवस के अवसर पर प्रभु सेवा परिवार के
समस्त सदस्यों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।।

संरक्षक
प्रभु सेवा परिवार

राष्ट्रीय अध्यक्ष का संदेश

Regn. No. 1537/2021

श्री सतीश श्रीवास्तव
राष्ट्रीय अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार



ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय

आज 15 सितम्बर प्रभु सेवा परिवार के पंचम स्थापना दिवस पर गुरूजी प्रभु सेवा परिवार के सभी सम्मानित सदस्य आज मेरे लिए यह क्षण केवल खुशी का नही, बल्कि भावुक होने का भी है। 15 सितम्बर 2021 को हमने गुरूजी के साथ एक छोटा सा संकल्प लिया था कि भारत के सभी तीर्थो में कथा का आयोजन ।

आज पाँच वर्ष बाद जब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मन श्रद्धा से भर जाता है। इन पाँच वर्षो में चारों धाम के अलावा अमरनाथ, उत्तराखण्ड के चारो धाम, ब्रज चौसारी कोस की यात्रा, श्रीलंका की यात्रा, आदि कैलाश की यात्रा, प्रयागराज महाकुम्भ के ग्यारह दिवसीय राम कथा, अयोध्या धाम में ग्यारह दिवसीय बाल्मीक रामायण, कुरूक्षेत्र में भगवत गीता के अठारह अध्याय की सुन्दर व्याख्या के साथ पुरियों मे भी सफलता पूर्वक कथा का आयोजन हो रहा है।

हमारी ये यात्रा केवल यात्रा नही है यह प्रभु सेवा परिवार की एक पहचान है विभिन्न स्थानों पर भण्डारा, सन्त सेवा और जन सेवा की भावना रही है। हमारी सबसे बड़ी ताकत हमारा परिवार है । गुरूदेव का आर्शीवाद, सभी सदस्यों के समर्पण में सभी को नमन करता हूँ ।

हम सब से मिलकर प्रभु सेवा परिवार एक संस्था नही बल्कि सेवा संस्कार और सर्मपण का परिवार है। प्रभु से मेरी यही प्रार्थना है कि हमारा तन सेवा में लगे, मन भक्ति में लगे और हमारा जीवन समाज कल्याण में समर्पित हो । आप सभी को पंचम स्थापना दिवस पर हृदय से हार्दिक शुभकामनायें ।





राष्ट्रीय अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Regn. No. 1537/2021

सम्पादकीय



श्रीमती सोनल खरे
सम्पादक

प्रभु सेवा परिवार की पंचम स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्मारिका 2026 प्रकाशित किया जा रहा है। प्रभु सेवा परिवार द्वारा स्मारिका का प्रकाशन किया जाना निसन्देह प्रशंसनीय है। प्रभु सेवा परिवार ने विगत वर्षो की तरह इस वर्ष भी बहुत ही सराहनीय कार्य किया है–

1. श्रीराम कथा (भरना, हापुड़ उ.प्र.)

11/10/2025 से 19/10/2025 भरना हापुड़ में श्री राम कथा का सफल आयोजन किया जिसमें भारी संख्या में लोगो भण्डारा प्रसाद का वितरण किया गया साथ ही 12 अक्टूबर को श्री श्याम संकीर्तन महोत्सव भी मनाया गया ।

2. वाल्मीकि रामायण (अयोध्या, उ.प्र.)

26 अक्टूबर से 5 नवम्बर तक (11 दिवसीय) कार्तिक के पुण्य मास के शुभ अवसर पर वाल्मीकि रामायण पर आधारित श्री राम कथा महोत्सव का आयोजन सरयू तट पर सियाराम किला झुनकी घाट अयोध्या धाम में किया गया । जिसमे भारी मात्रा में संतो की सेवा, बंदरो की सेवा व भण्डारा का आयोजन किया गया ।

3. श्री राम कथा (उज्जैन, म.प्र.)

पुरूषोत्तम मास के शुभ अवसर पर अवन्तिकापुरी में महाकाल की नगरी में भव्य संगीतमय श्री राम कथा का आयोजन किया गया । उज्जैन में विभिन्न स्थानो पर भण्डारे का आयोजन किया गया एवं महाकाल भगवान के दर्शन, काल भैरो, गढ़ काली माता के दर्शन, शिप्रा राम घाट पर स्नान व उज्जैन में सभी धार्मिक स्थानों के दर्शन के साथ ओमकारेश्वर ज्योतिर्लिंग दर्शन पूजन किया गया ।

4. आदि कैलाश यात्रा (उत्तराखण्ड)

15/06/2026 से 24/06/2026 तक उत्तराखण्ड में आदि कैलाश व ओम पर्वत के दर्शन, जोगेश्वर धाम, कैंची धाम, गोलू देवता और उत्तराखण्ड के प्राकृतिक सौन्दर्य के दर्शन किया ।

5. श्रीमद् भगवत गीता एवं गुरू पूर्णिमा महोत्सव (कुरूक्षेत्र, हरियाणा)

19 जुलाई से 29 जुलाई 2026 गुरू पूर्णिमा के शुभ अवसर पर भगवत गीता की जन्म स्थली जहां पर भगवान ने स्वयं गीता जी का गायन किया था कुरूक्षेत्र में गीता भवन ब्रह्मसरोवर के तट पर सम्पूर्ण गीता अध्यात्मिक व तात्विक व्याख्या, साथ में कुरूक्षेत्र के सभी धार्मिक स्थानों का भ्रमण, 29 जुलाई को गुरू पूर्णिमा का भव्य आयोजन व भण्डारा किया गया ।

6. बाल हनुमान कथा (हावडा, पश्चिम बंगाल)

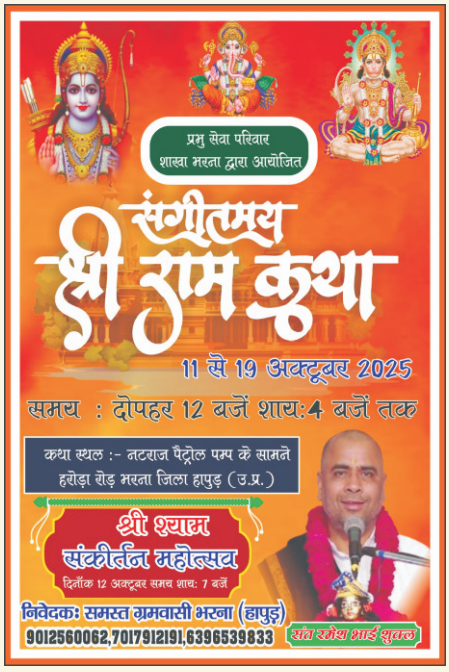
12 अगस्त से 15 अगस्त 2026 पश्चिम बंगाल की धरती पर बाल हनुमान कथा का भव्य आयोजन किया गया।

आगामी कथा पुरियों के क्रम में ज्ञान की धरा कांचीपुरम तमिलनाडू में नारद भक्ति सूत्र पर आधारित दिनांक 26 दिसम्बर 2026 से 30 दिसम्बर 2026 तक आयोजन निश्चित किया गया है।

गत वर्ष आयोजित धार्मिक यात्रायें एवं कथायें

1. श्रीराम कथा (भरना, हापुड़ उ.प्र.)

11/10/2025 से 19/10/2025 भरना हापुड़ में श्री राम कथा का सफल आयोजन किया जिसमें भारी संख्या में लोगो भण्डारा प्रसाद का वितरण किया गया साथ ही 12 अक्टूबर को श्री श्याम संकीर्तन महोत्सव भी मनाया गया ।













2. वाल्मीकि रामायण (अयोध्या, उ.प्र.)

26 अक्टूबर से 5 नवम्बर तक (11 दिवसीय) कार्तिक के पुण्य मास के शुभ अवसर पर वाल्मीकि रामायण पर आधारित श्री राम कथा महोत्सव का आयोजन सरयू तट पर सियाराम किला झुनकी घाट अयोध्या धाम में किया गया । जिसमे भारी मात्रा में संतो की सेवा, बंदरो की सेवा व भण्डारा का आयोजन किया गया ।



















3. श्री राम कथा (उज्जैन, म.प्र.)

पुरूषोत्तम मास के शुभ अवसर पर अवन्तिकापुरी में महाकाल की नगरी में भव्य संगीतमय श्री राम कथा का आयोजन किया गया । उज्जैन में विभिन्न स्थानो पर भण्डारे का आयोजन किया गया एवं महाकाल भगवान के दर्शन, काल भैरो, गढ़ काली माता के दर्शन, शिप्रा राम घाट पर स्नान व उज्जैन में सभी धार्मिक स्थानों के दर्शन के साथ ओमकारेश्वर ज्योतिलिंग दर्शन पूजन किया गया ।













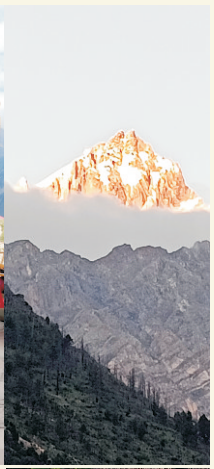
4. आदि कैलाश यात्रा (उत्तराखण्ड)

15/06/2026 से 24/06/2026 तक उत्तराखण्ड में आदि कैलाश व ओम पर्वत के दर्शन, जोगेश्वर धाम, कैंची धाम, गोलू देवता और उत्तराखण्ड के प्राकृतिक सौन्दर्य के दर्शन किया ।













5. श्रीमद् भगवत गीता एवं गुरू पूर्णिमा महोत्सव (कुरूक्षेत्र, हरियाणा)

19 जुलाई से 29 जुलाई 2026 गुरू पूर्णिमा के शुभ अवसर पर भगवत गीता की जन्म स्थली जहां पर भगवान ने स्वयं गीता जी का गायन किया था कुरूक्षेत्र में गीता भवन बह्मसरोवर के तट पर सम्पूर्ण गीता अध्यात्मिक व तात्विक व्याख्या, साथ में कुरूक्षेत्र के सभी धार्मिक स्थानों का भ्रमण, 29 जुलाई को गुरू पूर्णिमा का भव्य आयोजन व भण्डारा किया गया ।

























6. बाल हनुमान कथा (हावडा, पश्चिम बंगाल)

12 अगस्त से 15 अगस्त 2026 पश्चिम बंगाल की धरती पर बाल हनुमान कथा का भव्य आयोजन किया गया।



























प्रभु सेवा परिवार द्वारा भव्य संगीतमय रामकथा

मनीष खंडवानी/ उज्जैन

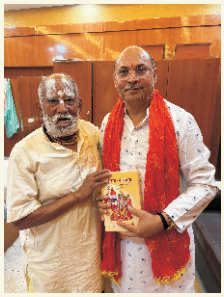
बाबा महाकाल की पावन नगरी में पुरुषोत्तम मास में श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा नीलगंगा स्थित हरिहर निकेतनवासी श्री प्रभु सेवा परिवार के तत्वाधान में 7 दिवसीय भव्य संगीतमय रामकथा का आयोजन हो रहा है जहां बड़ी संख्या में भक्त जन पूज्य गुरुदेव सत श्री रमेश भाई गुरुजन जी के मुखारबिन्द से भगवान श्री राम के जीवन दर्शन एवं उनके उपदेशों का श्रवण कर पुण्य लाभ अर्जित कर रहे हैं। प्रभु सेवा परिवार के अध्यक्ष श्री सतीश जी चालवाल ने जानकारी देते हुये बताया श्री भगवान महाकाल की पावन धरा पर भव्य राम कथा का आयोजन आनंद ही रोचक है ऐसा लग रहा है मानो साक्षात भगवान महाकाल को ही राम कथा का श्रवण हो रहा है। प्रभु सेवा परिवार का लक्ष्य है की भारत के हर एक गांव में सनातनियों में इसी प्रकार रामन करते हुये कथा का आयोजन हो। इसी तारतम्य में अक्षौहिणी पुरी में आज भव्य कथा का आयोजन हो रहा है जो की 16 मई 2026 से आरम्भ होकर 23 मई 2026 तक चलेगी। यहा प्रतिदिन सुबह 9 से 12 एवं शाम 4 से 7 तक कथा का श्रवण पाठ होता है जहा बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित होकर पुण्य लाभ अर्जित कर रहे है। आज भी भगवान श्री राम के विवाह उत्सव का एवं जी द्वारा भव्य व्याख्यान बताया गया जिसमे समस्त भक्त भाव विभोर हो उठे अंत में भगवान जी की आरती कर भोग प्रसादी वितरण किया गया।




















भगवत गीता चिंतन


भगवत गीता चिंतन


एवं
गुरू पूर्णिमा

एवं
गुरू पूर्णिमा




गीता चिंतन शिविर
एवं
गुरू पूर्णिमा महोत्सव

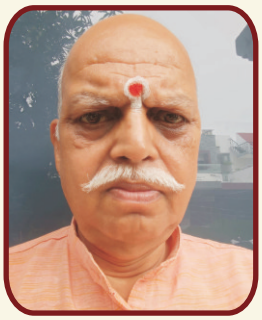
गीता चिंतन शिविर
एवं
गुरू पूर्णिमा महोत्सव

चिंतन शिविर
एवं


गीता चिंतन शिविर
एवं
गुरू पूर्णिमा महोत्सव

जन्म लाभ

श्री राजेन्द्र नाथ चौबे
लखनऊ



श्री गुरूदेव भगवान एवं संतजनों के आशीर्वाद से जब भी यह तनिक बोध हो कि यह मानव जन्म क्षणभंगुर होने के साथ–साथ अनमोल व प्रभु–कृपा प्रसाद है तभी से यत्न करके प्रतिदिन कुछ समय स्वयं के साथ एकांत सेवन करते हुए अकारण करूणा करने वाले परमात्मा की कृपा अनुभूति कर उनके प्रति कृतज्ञता सहित अपने कल्याणार्थ अवश्य चिंतन करना चाहिए । चौरासी लाख योनियों में मनुष्य योनि छोड़कर अन्य सभी मात्र कर्मफल भोग योनियां है। मनुष्य योनि में प्रारब्ध कर्मफल भोग के साथ कर्म करने की भी स्वतंत्रता है, अर्थात् मनुष्य स्वकृत अच्छे एवं बुरे कर्मों द्वारा सृजित कर्मफल भोगने हेतु बाध्य हो जाता है।

यादृशं कुरूते कर्म, तादृशं फलवाप्नुयात् ।
अवश्य भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभं ।।

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रामचरित मानस की चौपाइयों का यह अंश बड़े भाग मानुष तन पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ।। इशारा करता है कि देवताओं के लिए भी दुर्लभ ये मानव देह हम सभी के पुरूषार्थ की देन नहीं है बल्कि कबहुंक करि करूना नर देहीं। देत ईस बिनु हेतु सनेही ।। की देन यानी एकमात्र का कृपा प्रसाद ही है। श्री मद्भागवत कथाप्रसंग के अनुसार जब राजा परीक्षित अपने जीवन के अवशेष सिर्फ सात दिवस में ही मानव जीवन का श्रेष्ठतम श्री शुकदेव भगवान से प्राप्त करने हेतु जिज्ञासु थे तभी स्वर्ग से देव समूह अमृत कलश प्रदान कर उसके बदले कथामृत की याचना किए जिसमें उनको निराशा हाथ लगी। यह घटनाक्रम इस बात का संदेश देता है कि भगवत्कथामृत मात्र मनुष्य योनि में सुलभ है, अन्य योनियों तक कि यह देवता गण को भी अप्राप्त है। इस प्रकार भगवत्कृपा की श्रृंखला आगे बढ़ती है कि यदि मानव जीवन प्रभु कृपा प्रसाद है तो सत्संग कथाओं का श्रवणपान कर पाना भी उसी की देन है (न मानव देह मिलती ना ही कथामृत मिलता)।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई की पृष्ठभूमि पर सृजित 'प्रभु सेवा परिवार' संस्था में हम सभी का जुड़ना तथा इसकी शीतल छत्रछाया में भगवान के विभिन्न लीलास्थलों, तीर्थों, धामों, ज्योतिर्लिंगों एवं मोक्षदायिनी पुरियों के दर्शन तथा उन्ही के मध्य श्री गुरूदेव भगवान के मुखारविंद से रामायण श्रीमद्भागवत, शिवकथा एवं श्रीमद् भगवद्गीता के गूढ रहस्यों को सहजता से प्राप्त करना निश्चित रूप से भगवत्कृपा की देन है, श्री मद्भागवत पुराण का निम्न श्लोक इसकी पुष्टि भी करता हैः

दुर्लभो मानुषो देहे, देहिनाम् क्षणभंगुरः ।
तत्रापि दुर्लभो मन्ये, वैकुंठ प्रियदर्शनं ।।

अर्थात शरीरधारियों के लिए मानव देह पाना दुर्लभ है साथ ही क्षणभंगुर (नाशवान) प्राप्त कर प्रभु के प्रिय भक्तों संतों (श्री गुरूदेव) का दर्शन होना तो अति दुर्लभ है। 'अब मोहि भा भरोस हनुमंता । बिनु हरि कृपा मिलहिं नहि संता । भी इसी को दृढ़ करती है। जन्म–जन्मांतर के कर्मफल प्रारब्धवश हम इस जीवन में सुख–दुख, अनुकूलता–प्रतिकूलता प्राप्त करते हुए अर्श से फर्श पर अथवा सम्पन्नता से विपन्नता में परिवर्तन की अनेक घटनाएं देखते एवं प्रभावित भी होते रहते हैं किन्तु यदि इसी में सकारात्मक दृष्टिकोण रखें तो अनुभूति होगी कि बिना पुरूषार्थ हम सभी पर निरंतर प्रभु कृपा बरस रही है। जिस प्रकार किसी पात्र में रखे दूध अथवा जल में सें एक बूंद निकालकर उसका वैज्ञानिक परीक्षण किया जाए तो उस बूंद के गुण–तत्व पूरे पात्र के दूध/जल के तद्रूप होगा, ठीक उसी प्रकार ईश्वर अंश जीव अविनाशी व श्री गीता जी में स्वयं भगवान की वाणी ''ममैवांशो जीव लोके जीवभूतः सनातनः'' कथन के अनुसार यह जीवात्मा ईश्वर अंश होने के कारण अविनाशी है और परमात्मा के गुण जो आनंद सिंधु सुख रासी की तद्रूपता हेतु सदैव सुख–शांति का संधान करता रहता है जो नित्य परिवर्तनशील जगत में असम्भव है। चूंकि इस कलियुग के कुछ विशेष गुण–धर्म है जिनका उल्लेख श्री मानस जी में 'कलि केवल मलि मूल मलीना । पाप पयोनिधि जल मल मीना' बता कर किया गया है यानी यह युग पाप एवं मलीनता से भरा हुआ है जिसके कारण मनुष्यों का मन पाप रूपी समुद्र में मछली की भांति रहता है। पापाचरण प्रधानयुग के प्रभाव में पड़े मनुष्यों के उद्धार हेतु करूणानिधान परमात्मा ने ''मानस पुन्य होहि नहि पापा'' विधान रचकर अन्य युगों में प्रचलित अत्यंत कठिन साधनों यथा योग, यज्ञ, तप, ज्ञान, वैराग्य आदि के अतिरिक्त कृपा पूर्वक अति सुगम (श्री नाम भगवान का आश्रय)

मार्ग भगवत्प्राप्ति का दिखाया । जिसे श्री मानस जी की अनेकों चौपाइयों में प्रकाशित किया गयाः कलयुग केवल नाम अधारा । सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा । नहि कलि करम न भगति विवेकू । राम नाम अवलंबन एकू ।। यहां तक भी कहा गया कि ''पापिउ जाकर नाम सुमिरिहिं । अति अपार भवसागर तरिहिं ।। ''इन संदेशों पर अपनी मुहर लगाते हुए श्री गीता जी में प्रभु कहते हैः

तेषां सतत युक्तानां भजताम् प्रीति पूर्वकम् ।
ददामि बुद्धि योगं तो येन माम उपयांति ते ।।

साथ ही साथ ''यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि'' बताकर श्री नाम जप को 'सर्वश्रेष्ठ साधन' के स्थान पर प्रतिस्थापित किया । सत्संग की महिमा व इसकी प्राप्ति का हेतु 'बिनु सत्संग विवेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ ना सोई । 'से स्पष्ट है कि यह भी मात्र प्रभुकृपा से प्राप्त है और यही वह बूटी है जिससे बुद्धि में विवेक का जागरण होता है। इस विवेक के जागरण से ही हमारी सद्गुरू–भगवान में आस्था दृढ़ होती है। जीवन में गुरू का स्थान/महत्व 'गुरू बिनु भव निधि तरहिं न कोई । जो विरंचि संकर सम होई ।।' से स्वयं प्रकाशित है। मानव जीवन के लक्ष्य एवं अनुकूल साधन का ज्ञान निम्न दो चौपाइयों से होता हैः

नर तनु भव बारिधि कहुं बेरो । सन्मुख मरूत अनुग्रह मेरो ।।
करनधार सद्गुरू दृढ़ नावा । दुर्लभ साथ सुलभ करि पावा ।।

अर्थात यह मानव देह ही भवसागर से तारने के लिए बेड़ा (जहाज) है, मेरी कृपा ही अनुकूल वायु है, सद्गुरू ही मजबूत जहाज के कर्णधार है, इस प्रकार दुर्लभ (कठिनता से प्राप्त होने वाले) साधन सुलभ होकर भगवत्कृपा से सहज प्राप्त है। इस प्रकार मनुष्य जन्म पाकर संत/गुरूजनों का सानिध्य, तीर्थों–प्रभु लीला स्थलों का दर्शन, सत्संग प्रसाद पाना ''अति हरिकृपा जाहि पर होई।।'' अंगीकार कर प्रभु कृपा की अनुभूति करते हुए उनके प्रति अति कृतज्ञता का भाव निरंतर रखना नैतिक कर्तव्य है। प्रभु से यह भी याचना नित्य प्रति करते है कि यदि प्रारब्धवश जीवन में कभी प्रतिकूलता भी आये तब भी हम सद्गुरू के आश्रय रहकर शास्त्रानुकूल आचरण से न तो विमुख हों ना ही भगवत नाम जप (गुरूमंत्र जप) ही छूटे । प्रभु से नित्य प्रार्थना कि ''सीताराम चरण रति मोरे । अनुदिन बढ़हु अनुग्रह तोरे ।।'' के साथ अपने हृदय में दृढ़ता पूर्वक बैठा लें की ''लाभ न किछु हरि भगति समाना'' एवं ''जन्म लाभः परः पुंसां अन्ते नारायण स्मृतिः'' शिरोधार्य कर लें ताकि जीवन का शेष अमूल्य समय सार्थक हो कृतकृत्य हो सके ।

।। जय जय श्री सीताराम ।।





भगवत गीता सूत्र

श्री सतीश श्रीवास्तव
राष्ट्रीय अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार



18 अध्याय

पहला अध्याय :– गलत सोच ही जीवन की एकमात्र समस्या है

दूसरा अध्याय :– सही ज्ञान ही हमारी सारी समस्याओं का अंतिम समाधान है।

तीसरा अध्याय :– निस्वार्थता हीसमृद्धि का एकमात्र रास्ता है।

चौथा अध्याय :– अपने प्रत्येक कार्य को प्रार्थना में परिवर्तित करो ऐसे कार्य करो जैसे प्रार्थना कर रहे हो ।

पांचवा अध्याय :– प्रत्येक कार्य प्रार्थना का कार्य हो सकता है अगर तुम उसको परमात्मा के साथ जोड़ दो ।

छठा अध्याय :– जिस क्षण व्यक्ति अपने अहंकार का परित्याग कर देता है उसको आनंद की अनुभूमि हो जाती है

सातवां अध्याय :– आपने जो सीखा है उसे जीने की कोशिश करो सीखा ज्यादा है जिया कम है

आठवां अध्याय :– आप कभी अपने को ना छोड़ो जो आपका अस्तित्व है आपके अंदर जो आपकी वास्तविकता विराजमान है।

नौवा अध्याय :– अपने आशीर्वाद को महत्व दीजिए । आशीर्वाद लेने में और देने में शर्म मत कीजिए कभी–कभी दुश्मन को भी आशीर्वाद देना चाहिए ।

दसवां अध्याय :– आपके चारों तरफ जो है वह सब दिव्य है देखने की दृष्टि होनी चाहिए ।

ग्यारहवांअध्याय :– सत्य जैसा है उसको वैसे ही देखने की कोशिश करो और इसे देखने का आधार है समर्पण

बारहवां अध्याय :– मन को दौड़ना अच्छा लगता है पर इतनी कोशिश कर सकते हैं कि मन हायर चीजों में स्ट्रक हो । कहीं ना कहीं तो मन फसेगा ही अटकेगा ही पर कोशिश की जाए की छोटी–छोटी चीजों को ध्यान में न रखें, मन न फंसे । मन अच्छे विचारों में उलझे ।

तेरहवा अध्याय :– माया को अलग कर दीजिए और परमात्मा से जुड़ जाइए ।

चौहदवां अध्याय :– अपनी जीवन शैली को भी ऐसे जिए जो आपके दृष्टिकोण से मेल खाती हो ।

पंद्रहवां अध्याय :– अपने जीवन में देवत्व को प्राथमिकता दीजिए ।

सोलहवां अध्याय :– आप अगर अच्छे हैं तो आप अपने ऊपर एहसान करते हैं किसी दूसरे के ऊपर नहीं ।

सत्रवां अध्याय :– अधिकार का चयन तो बहुत विचार से होता है। और अगर विचार करेंगे तो इस जगत में ऐसा कुछ भी नहीं है जिस पर हमारा अधिकार हो ।

अठारहवां अध्याय :– जीवन में अपने जैसे लौकिक लक्ष्य बनाया है अलौकिक लक्ष्य भी बनायें, आर्थिक लक्ष्य बनाया है परमार्थिक लक्ष्य भी बनायें, अर्थ और काम के लक्ष्य बनाए हैं धर्म और मोक्ष के लक्ष्य भी बनायें, सुख और दुख के लक्ष्य बनाए हैं तो जीवन में आनंद के लक्ष्य भी बनाएं।

मानस - नारी शक्ति

श्री रमेश कुमार दीक्षित
लखनऊ



श्री सद्गुरूदेव भगवान कहते है कि जब शक्ति का सकारात्मक प्रयोग होता है तो सृजन होता है तथा शक्ति के नकारात्मक प्रयोग से विध्वंस (विनाश) होता है। महिला (नारी–शक्ति) का तात्पर्य है ममता, हिम्मत और लज्जा ।

नारी जब सारथी होती है तो रक्षा करती है, जब स्वार्थी होती है तो प्राण भी ले लेती है। कैकेयी इसका उदाहरण है। जहाँ सौन्दर्य का दर्शन हो, वहाँ माँ दिखाई देने लग जाय, यहीं सनातनी दृष्टि है। स्वामी श्री विवेका नन्द इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। जब एक ही पुरूष भटकता है तब, परन्तु जब नारी के पैर डगमगाने लगते हैं तो समस्त परिवार डगमगा जाता है। यही है नारी शक्ति की महानता ।

श्री राम चरित मानस में सन्त श्री तुलसीदास जी ने कुल 30 नारी–शक्ति का वर्णन किया है। इनमें से उन्होने कुछ की वन्दना की है, कुछ की निन्दा की है तथा कुछ से तटस्थ (उदासीन) रहे । मानस में वर्णित 30 नारियों का विवरण निम्न प्रकार है :–

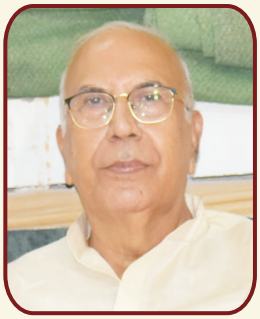
1. सरस्वती 2. सीता 3. कौशिल्या 4. सुमित्रा 5. कैकेयी 6. उर्मिला 7. माण्डवी
8. श्रुतिकीर्ति 9. अहिल्या 10. शबरी 11. मन्दोदरी 12. तारा 13. अनसूया 14. त्रिजटा
15. सुलोचना 16. शुर्पणखा 17. लंकिनी 18. ताड़का 19. मन्थरा 20. सुरसा 21. सिंहिका
22. स्वयंप्रभा 23. सती 24. पार्वती 25. सुनयना 26. मैना 27. रमा 28. विश्वमोहनी
29. शतरूपा 30. रति

उक्त नारी शक्तियों में सती, सीता, शूर्पणखा, शबरी तथा स्वयंप्रभा 5 ऐसी ऐसी है जो क्रमशः परीक्षा से, इच्छा से, समीक्षा से प्रतीक्षा से तथा इच्छा से भगवान राम (परमात्मा) को पाना चाहती है।

1. सीता इच्छा से श्रीराम को पाना चाहती है, इसका तात्पर्य यह है कि माता सीता का श्रीराम के प्रति प्रेम और वरण किसी वाहरी दबाब या केवल सामाजिक समझौते के कारण नहीं था, बल्कि उनके मन की सच्ची और पवित्र आन्तरिक इच्छा थी । पौराणिक प्रसंगो के अनुसार यह जीव (सीता–तत्व) का परमात्मा (श्रीराम) के प्रति स्वाभाविक आकर्षण और समर्पण है।
2. माता सती द्वारा भगवान राम की परीक्षा लेने का तात्पर्य यह है कि जब भगवान श्रीराम माता सीता के वियोग में बन में व्याकुल होकर उन्हें ढूढ रहे थे, तब यह देखकर सती जी के मन में यह शंका (संशय) उत्पन्न हुई कि जो स्वयं को भगवान विष्णु का अवतार कहते है वे अपनी पत्नी के वियोग में इतने दुःखी और लाचार कैसे हो सकते हैं। इस बात की सत्यता के लिये माता सती ने माता सीता का रूप धारण करके भगवान राम की परीक्षा ली थी ।
3. शूर्पणखा द्वारा श्रीराम को समीक्षा से पाने का तात्पर्य यह है कि साम, दाम, दण्ड, भेद की रणनीति या कूटनीति, रूप बदलना या बल प्रयोग के सन्दर्भ में है। सूर्पणखा सीधे अपने राक्षसी रूप में नहीं आई थी, उसने पहले राम और उनके रूप का आंकलन (समीक्षा) किया और फिर खुद को एक सुन्दर स्त्री (मोहिनी रूप) में बदलकर श्रीराम को रिझाने का प्रयास किया ।
4. शबरी राम को प्रतीक्षा से पाना चाहती है का तात्पर्य भगवान के प्रति अटूट विश्वास, गहरी निष्ठा, धैर्य और निश्छल प्रेम से है। शबरी को अपने गुरू मतंग ऋषि के वचनो पर पूर्ण विश्वास था कि श्रीराम उसकी कुटिया में अवश्य आयेंगे, उनकी यह प्रतीक्षा केवल समय बिताना नहीं बल्कि श्रद्धा और विश्वास तथा एक गहरी आध्यात्मिक साधना (तपस्या) थी ।
5. स्वयं प्रभा की इच्छा या संकल्प का अर्थ यहाँ कोई सांसारिक या भौतिक कामना नही, बल्कि योग और तपस्या की वह पराकाष्ठा है, जहाँ भक्त अपनी आन्तरिक चेतना (संकल्प) से ईश्वर को अपने हृदय में अनुभव करके उनके साक्षात् स्वरूप को पाना चाहता है।

(श्री गुरूदेव की कृपा से)

कुंभ तेरे जाने के बाद



श्री सत्य प्रकाश राय
से० नि० अपर जिलाधिकारी
प्रयागराज (उ. प्र.)

याद में गंगा जल है उदास, यमुना जल है उदास ।
दोनों के पुलिन है उदास, गंगा और यमुना है उदास ।।

ब्रह्ममुहुर्त की शीतल हवा, कुहासों का जंगल ।
किनारे का कोलाहल, सोच कर मन है उदास ।।

न वेद की ऋचा है, न मंत्रोच्चार की अनुगूंज है ।
न ऋषियों की टोली, न मुनियों की मण्डली ।।

न यतियों की साधना, न योगियों का योग ।
न संतो की अमृतवाणी, न समवेत अनाहूत सम्मेलन ।।

न देश दुनियाँ के आस्थावान, न सनातन के श्रद्धावान ।
न स्नानर्थियों का रेला, न खोमचा न ठेला ।।

न गरीबों का रोजगार, न लंगर का भेज ।
न प्रसाद का वितरण, न प्रशासन की चौकसी ।।

न टेम्पो वाहनो की कतार, न सम्मिलन संयोग ।
न नभाच्छादित होम धूम्र, न अखंडित सुगंध ।।

न नागों न यक्षों, न देवों न किन्नरों ।
न नागाओं की मण्डली, न नागाओं की दीक्षा ।।

न दाता न दानार्थी, दिन है बदहवास ।
रात है काली उदास, न विद्युत का प्रकाश ।।

न पक्षत्रय का अमृत प्रवाह, किसी का मन है उदास ।
रेत पर बिन छत, राज प्रयाग महल उदास ।।

बिन दीवाल का महल, दिन सूरज की निगरानी ।
निशा में चाँद पहरेदारी, तारामंडल का वितान ।।

किसी की भरभरायी आँख, देख रही मौन और उदास ।
पूछती है पसरी शांति से, कब लौटेंगे पीयूष घट ले ।।

प्रत्यावर्तित हो महाकुंभ, क्षिति, जल, नभ, समीर ।
तीरथराज महाराज, प्रयागराज हैं उदास ।।

बुजुर्गो पर लेख

श्रीमती सुनीता कौशिक
गुरुग्राम



अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम ।।

अर्थ : जो व्यक्ति सुशील और विनम्र होते हुए, बड़ों का अभिवादन व सम्मान करने वाले होते हैं तथा अपने बुजुर्गों की सेवा करने वाले होते हैं । उनकी आयु, विद्या, कीर्ति और बल इन चारों में वृद्धि होती है।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।।

अर्थ : कोई भी काम कड़ी मेहनत से ही पूरा होता हैं, सिर्फ सोचने भर से नहीं ।
जैसे कभी भी सोते हुए सिंह के मुंह में हिरण खुद प्रवेश नहीं करता ।

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ।।

अर्थ : जिसके पास यश, विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म में से कुछ नहीं वह मनुष्य पृथ्वी का बोझ है और वह ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं जैसे एक मृग ।

जीवन को मुख्यत:तीन अवस्थाओं में बाँटा गया है। ये अवस्थाएं है– बाल्यावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्था । जिस प्रकार शैशव अर्थात् बाल्यावस्था के बाद युवावस्था आती है, ठीक उसी प्रकार युवावस्था के बाद वृद्धावस्था आती हे। बाल्यावस्था किसी भी व्यक्ति के जीवन का स्वर्णिम काल होता है। यही कारण है कि हर व्यक्ति अपने बचपन को फिर से जीने की इच्छा रखता है। जीवन में सृजनात्मक तथा रचनात्मकता का संचार करने वाली युवावस्था साहस, उमंग और जोश से भरी होती है। साधारणतः अपने जीवन की अधिकांश उपलब्धियाँ मनुष्य उसी अवस्था में अर्जित करता है। इसीलिए हर कोई सदैव युवा रहने का स्वप्न देखता है। लेकिन वृद्धावस्था इन दोनों अवस्थाओं से भिन्न है वृद्धावस्था जीवन का वह सोपान होती है, जब व्यक्ति अपने जीवन की संध्या वेला का अनुभव करता है। इस अनुभव का सबसे पहला माध्यम बनता है – उसका अपना शरीर शारीरिक क्षमता में कमी आने से दूसरों पर निर्भरता बढ़ जाती है। इन्द्रियों की गति धीमी पड़ जाती है और व्यक्ति धीरे–धीरे इन्द्रियों पर नियन्त्रण खोने लगता है।

उम्र भर कड़ा परिश्रम करने के बाद वृद्धावस्था व्यक्ति के आराम की अवस्था होती है। इस समय उसे अपने ऊपर ध्यान देने का भरपूर समय मिलता है, परन्तु आधुनिक दौर में स्थिति विपरीत है।

सभी व्यक्तियों को यह मानसिक रूप से स्वीकार कर लेना चाहिए कि वृद्धावस्था एक–न–एक दिन सबके जीवन में आती है। वृद्धों के साथ सम्मानजनक व्यवहार न करना पूर्णतः अनैतिक है। वृद्धजनों की उपस्थिति एवं मार्गदर्शन परिवार और समाज दोनों के लिए कल्याणकारी है। यदि आज हम उनका सम्मान करेंगें, तभी हम अपनी आने वाली पीढ़ी से सम्मान पाने के अधिकारी होंगे ।
बूढ़ा, वृद्ध और प्रौढ़ इन तीनों में भी बहुत अन्तर है।

प्रौढ़ परिपक्वता का चिन्ह है, वृद्ध ढलती हुई आयु का चिन्ह है
बूढ़ा नकारात्मक स्थिति का प्रतीक है। प्रौढ़ परिपक्वता का चिन्ह है
वृद्ध ढलती हुई आयु का चिन्ह है, बूढ़ा नकारात्मक स्थिति का प्रतीक है।
आओ, अपने आपको बूढ़ा या वृद्ध ना कहकर प्रौढ़ की श्रेणी में लाने का प्रयास करें ।

अहल्या - वो पत्थर नहीं, धैर्य की देवी थी

श्रीमती अन्जू श्रीवास्तव
ग्रेटर नोएडा



कभी–कभी लोग सिर्फ कहानी सुनते हैं, पर उसके पीछे की सच्चाई नहीं समझते । रामायण की एक ऐसी ही स्त्री थी – अहल्या,
जिसे सबने ''शापित'' कहा, पर असल में वह धैर्य, निष्ठा और क्षमा का सजीव रूप थी ।
सृष्टि की सबसे सुंदर स्त्री
देवताओं ने मिलकर एक अद्भुत स्त्री का निर्माण किया –
अहल्या, जिसका अर्थ था ''जिसमें कोई दोष न हो।'' वह ऋषि गौतम की पत्नी बनी –
ज्ञान, तप और संयम का प्रतीक पुरूष ।
अहल्या भी तपस्विनी थीं, पर सुंदरता ऐसी कि देवता भी मोहित हो उठे । देवताओं ने उन्हें देखकर कहा –
''धरती पर ऐसी सुंदरी दोबारा नहीं जन्मेगी ।''
इंद्र का प्रलोभन
देवताओं के राजा इंद्र ने सोचा – ''अगर मुझे अहल्या का सान्निध्य मिले, तो मैं पूर्ण हो जाऊं।''
एक दिन ऋषि गौतम भोर में गंगा स्नान करने गए, और इंद्र ने मौका देखा । वह गौतम ऋषि का रूप धारण कर अहल्या के आश्रम में आया ।
अहल्या ने देखा – वही स्वरूप, वही तेज... वह भ्रमित हो गई । एक पल का धोखा, और वह देवता के छल में आ गई।
ऋषि का शाप
जब गौतम ऋषि लौटे, उन्होने अहल्या को देखा और सत्य जान लिया । उनकी आंखों में क्रोध नहीं, आघात था
उन्होंने कहा – तुम्हारे इस कर्म से आश्रम की पवित्रता भंग हुई है। अब तुम अदृश्य हो जाओगी, और पथ्थरवत रहोगी, जब तक भगवान राम तुम्हें अपने चरणों से स्पर्श न करें ।'' यह कहकर वे चले गए । अहल्या वहीं खड़ी रह गई – एक पत्थर की तरह, न बोल सकीं, न रो सकीं, बस प्रायश्चित में डूब गई।
वर्षो की प्रतीक्षा साल नहीं – युग बीत गई । वन में ऋतुंए बदलती रहीं, पेड़ बढ़ते रहे, पर अहल्या वहीं रही –
निश्चल, मौन, अकेली । वही सोचती रहीं – ''क्या मैं दोषी हूं? या सिर्फ छल की शिकार ?''
पर उन्होंने कभी भगवान से शिकायत नहीं की । उनका तप इतना गहरा था कि पत्थर आत्मा भी कांप उठे ।
भगवान राम का आगमन – समय बीता, त्रेता युग आया । विश्वामित्र श्रीराम और लक्ष्मण को लेकर उस वन में आए ।
राम ने जैसे ही उस पत्थर को देखा, उनकी आंखों में करूणा आ गई। उन्होंने चरण रखा, और वह पत्थर प्रकाश से भर उठा।
अचानक वहाँ एक तेजस्वी स्त्री प्रकट हुई – वही अहल्या ! उनका चेहरा अब शांत, निर्मल और दिव्य था ।
वह बोलीं – ''प्रभु, आपके चरणों ने मुझे पुनर्जन्म दिया । अब मुझे मोक्ष मिला ।''
राम ने मुस्कुराते हुए कहा – ''मां, आपका पवित्र हृदय कभी दूषित नहीं हुआ था । यह शाप नहीं, तपस्या थी– और अब आपका हर पल मुक्त है।''
अहल्या का मोक्ष – अहल्या ने भगवान का आशीर्वाद लिया और पुनः अपने पति ऋषि गौतम के पास लौटीं । गौतम ने भी उन्हे गले लगाकर कहा – ''अब मुझे सच्चा तप मिला है, क्योंकि मेरी अहल्या वापस आई है।''
दोनों ने फिर से साथ में तप किया,
और अंततः दिव्य लोक को प्राप्त हुए ।

सीख – अहल्या की कहानी बताती है कि – एक स्त्री की गलती से ज्यादा बड़ा उसका धैर्य और प्रायश्चित होता है।
समाज जल्दी निर्णय ले लेता है, पर भगवान न्याय करने में कभी जल्दबाजी नहीं करते । और जो मौन में भी श्रद्धा रखे – उसे भगवान स्वयं आकर मुक्त करते हैं।

प्रभु सेवा परिवार



सुश्री शिप्रा दीक्षित
लखनऊ (उ.प्र.)

पूज्य गुरू जी की प्रेरणा व सद्वचनों से यह भाव जाग्रत हुआ कि प्रत्येक जीव में ईश्वर का वास है, इस लिए सभी को वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव रखते हुए नि:स्वार्थ भाव से प्रत्येक निर्धन, दीन–हीन, असहाय, जरूरतमंद की सेवा करनी चाहिए ।

प्रभु सेवा परिवार मात्र शब्द नही है, हमारे प्रभु सेवा परिवार का अर्थ कार्य एवं लक्ष्य बहुत ही व्यापक हैं। पूज्य गुरू जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन तथा अध्यक्ष श्री सतीश श्रीवास्तव जी के कुशल संचालन में प्रभु सेवा परिवार जनमानस के सहयोगार्थ कार्य कर रहा है।

प्रभु सेवा परिवार का यह दृढ़ विश्वास है कि

सेवा प्रभो मम धर्म:, भक्तिरेव मम् साधना । चरणोयस्य समर्पितं, जीवनं मम् सर्वदा ।।

इसलिए प्रभु सेवा परिवार का प्रत्येक सदस्य

सेवा परमो धर्म:, सेवा परं तप: । सेवया लभते भक्तिं, भक्त्या लभते हरिम् ।।

के भाव को आत्मसात् करते हुए कार्य करता है। यही कारण है कि प्रभु सेवा परिवार जनमानस के कल्याण हेतु संकल्पित है। प्रभु सेवा परिवार के कुछ प्रमुख उद्देश्य है :– सनातन धर्म का प्रचार प्रसार, गौ सेवा, तीर्थ यात्राएं, वंचित वर्ग का सहयोग आदि ।

हमारा प्रभु सेवा परिवार प्रत्येक असहाय जीव के सहयोग हेतु तन मन धन से सदैव तत्पर है। हमें पूर्ण विश्वास है कि नर सेवा ही नारायण सेवा है।

हम सभी जन अत्यन्त सौभाग्यशाली है जो गुरू जी की प्रेरणा एवं सान्निध्य में इन प्रकल्पो से जुड़कर अपने जीवन को धन्य बनाने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। ऐसे पूज्य गुरूजी को कोटि–कोटि वन्दन एवं प्रणाम ।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाज्जन शलाकया । चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नम: ।।



श्री अलेन्द्र कौशिक
गुरूग्राम (हरियाणा)

मुस्कान मानव हृदय की मधुरता को दर्शाती है और शांति बुद्धि की परिपक्वता को और दोनों का ही होना मनुष्य की संपूर्णता को जीवन के कुछ संबंध ऐसे होते है, जो किसी पद–प्रतिष्ठा के मोहताज नहीं होते, वो स्नेह और विश्वास की बुनियाद पर टिके होते है। डूबते सूर्य को देख कर हर कोई अपने घर की लाईट जला लेता है। मगर ढलती उम्र को देख कर कोई भी अपनी आत्मा की लाईट जलाने की कोशिश भी नहीं करता.....

हमारे सदस्यगण

प्रभु सेवा परिवार ने अपने उद्देश्य के प्रचार के लिए कई सदस्य बनाए हैं। सदस्यों के विवरण इस प्रकार है।



श्री सतीश श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1009



श्री निरंजन कु० अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1016



श्री संजय कु० उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1023



श्रीमती अंजू श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1010



श्री ललित प्र० जोशी
सदस्य आईडी: 1017



श्री जितेंद्र कु० उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1024



श्री अभिषेक श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1011



श्री ओम प्रकाश पान्डेय
सदस्य आईडी: 1018



श्री अरविंद श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1025



श्री अरूण कुमार शुक्ला
सदस्य आईडी: 1012



श्री बलदाऊ जी श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1019



श्री बालमुकुंद पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1026



श्री भूपेंद्र गुप्ता
सदस्य आईडी: 1013



श्री शिवपूजन लाल श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1020



श्री रमेश कुमार दीक्षित
सदस्य आईडी: 1027



श्री राकेश अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1014



श्री विष्णु शंकर दूबे
सदस्य आईडी: 1021



श्रीमती इति अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1028



श्री सत्येंद्र कु० श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1015



श्री संदीप सिंह
सदस्य आईडी: 1022



श्री जानकी प्रसाद माहेश्वरी
सदस्य आईडी: 1029


श्री बी० बी० लाल
सदस्य आईडी: 1030


श्री सत्य प्रकाश राय
सदस्य आईडी: 1038


श्री उमेश चन्द्र दीक्षित
सदस्य आईडी: 1046


श्री आर० पी० पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1031


श्रीमती सुनीता उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1039


श्री किशन दास तिवारी
सदस्य आईडी: 1047


श्री ए० एन० लाल श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1032


श्रीमती रंजना शुक्ला
सदस्य आईडी: 1040


श्री सोहन लाल शुक्ला
सदस्य आईडी: 1048


श्री ईश्वर शरण मिश्रा
सदस्य आईडी: 1033


श्रीमती अर्चना उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1041


श्री राजेन्द्र नाथ चौबे
सदस्य आईडी: 1049


श्री विनोद शर्मा
सदस्य आईडी: 1034


श्री इकान्त गुप्ता
सदस्य आईडी: 1042


श्री बलराम सिंह यादव
सदस्य आईडी: 1050


श्री आशुतोष श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1035


श्री ओमप्रकाश पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1043


श्री दिनेश कुमार शुक्ल
सदस्य आईडी: 1051


श्रीमती शिप्रा दीक्षित
सदस्य आईडी: 1036


श्री बृज राज पांडे
सदस्य आईडी: 1044


श्री प्रकाश शर्मा
सदस्य आईडी: 1052


श्री अलेन्द्र कुमार शर्मा
सदस्य आईडी: 1037


श्री सुशील कुमार शुक्ला
सदस्य आईडी: 1045


श्रीमती शीला शर्मा
सदस्य आईडी: 1053


श्री राम आधार पांडेय
सदस्य आईडी: 1054


श्री राम शरण कूलवाल
सदस्य आईडी: 1062


श्रीमति कुसुम पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1070


श्री सूबेदार शुक्ल
सदस्य आईडी: 1055


श्री पतिराम कश्यप
सदस्य आईडी: 1063


श्री त्रिलोकी नाथ शर्मा
सदस्य आईडी: 1071


श्री रघुवंशमणि तिवारी
सदस्य आईडी: 1056


श्रीमती उत्तरा कश्यप
सदस्य आईडी: 1064


श्रीमती उर्मिला पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1072


श्रीमती अनुपमा थापर
सदस्य आईडी: 1057


श्री दाऊ लाल तिवारी
सदस्य आईडी: 1065


श्री सुभाष चन्द
सदस्य आईडी: 1073


श्री अवनीश कुमार मिश्रा
सदस्य आईडी: 1058


श्रीमती लक्ष्मी शर्मा
सदस्य आईडी: 1066


श्रीमती ज्योत्सना शर्मा
सदस्य आईडी: 1074


श्री निवास पांडे
सदस्य आईडी: 1059


श्री शेष नारायण दुबे
सदस्य आईडी: 1067


श्री राम अवतार यादव
सदस्य आईडी: 1075


श्री अंकित मिश्र
सदस्य आईडी: 1060


श्री विनोद कुमार राय
सदस्य आईडी: 1068


श्री विनोद वर्मा
सदस्य आईडी: 1076


श्री प्रेम प्रकाश शर्मा
सदस्य आईडी: 1061


श्री आनन्द प्रकाश मिश्रा
सदस्य आईडी: 1069


श्रीमती किरन वर्मा
सदस्य आईडी: 1077


श्री अमित वर्मा
सदस्य आईडी: 1078


श्रीमती ममता चौबे
सदस्य आईडी: 1086


श्री राजेन्द्र गर्ग
सदस्य आईडी: 1094


श्री हरिओम शुक्ला
सदस्य आईडी: 1079


श्रीमती सोनल खरे
सदस्य आईडी: 1087


श्री द्वारिका सिंह
सदस्य आईडी: 1095


श्री नन्दकिशोर मिश्रा
सदस्य आईडी: 1080


श्रीमती अन्नपूर्ना राय
सदस्य आईडी: 1088


श्री बलबीर कृष्ण गर्ग
सदस्य आईडी: 1096


श्री अनुज शुक्ला
सदस्य आईडी: 1081


श्री गिरधारी लाल शर्मा
सदस्य आईडी: 1089


श्री राजेन्द्र कुमार
सदस्य आईडी: 1097


श्री अमन तिवारी
सदस्य आईडी: 1082


श्रीमती मन्जूला खरे
सदस्य आईडी: 1090


श्री सुरेश महा सेठ
सदस्य आईडी: 1098


श्री विपिन सिंह
सदस्य आईडी: 1083


श्री विनय खरे
सदस्य आईडी: 1091


श्री हरीश चन्द्र गोयल
सदस्य आईडी: 1099


श्री सुरेन्द्र अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1084


श्रीमती सुनीता पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1092


श्रीमती सुशीला दीक्षित
सदस्य आईडी: 1100


श्री गोपाल गुप्ता
सदस्य आईडी: 1085


श्रीमती मिथलेश शर्मा
सदस्य आईडी: 1093


श्रीमती सुनीता कौशिक
सदस्य आईडी: 1101


श्रीमती आशा रानी अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1102


श्री शशीकान्त शुक्ला
सदस्य आईडी: 1110


श्री प्रेम प्रकाश शर्मा
सदस्य आईडी: 1118


श्रीमती वन्दना पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1103


श्री मोहन सिंह
सदस्य आईडी: 1111


श्रीमती सीमा सिंह
सदस्य आईडी: 1119


श्री अरूण कुमार मिश्रा
सदस्य आईडी: 1104


श्रीमती रजनी सिंह
सदस्य आईडी: 1112


श्री सुनील कुमार शर्मा
सदस्य आईडी: 1120


डा. जी. सिंह
सदस्य आईडी: 1105


श्री परमेश्वर घोष
सदस्य आईडी: 1113


श्री गिरीश चन्द्र शर्मा
सदस्य आईडी: 1121


श्री अजय तिवारी
सदस्य आईडी: 1106


श्री प्रवीन कुमार
सदस्य आईडी: 1114


श्रीमती राजेश त्रिपाठी
सदस्य आईडी: 1107


श्रीमती सुषमा गर्ग
सदस्य आईडी: 1115


श्री लोकेश चौबे
सदस्य आईडी: 1108


श्री तीजू राम साहू
सदस्य आईडी: 1116


श्री गोपाल लाल लेहरा
सदस्य आईडी: 1109


श्रीमती मोहन कुमारी साहू
सदस्य आईडी: 1117

यात्रा एवं कथा में उत्कृष्ट सहयोग के लिए सम्मानित सदस्य गण

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. : 1537/2021

क्रमांक-01 दिनांक: 06/01/2022

सम्मान पत्र



श्री सुशील कुमार खन्डेलवाल

श्री सुशील कुमार खन्डेलवाल द्वारिकापुरी भागवत कथा दिनांक 24 दिसम्बर 2021 से 02 जनवरी 2022 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए सम्मान से विभूषित किया जाता है, हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. : 1537/2021

क्रमांक-02 दिनांक: 06/06/2022

सम्मान पत्र



श्री रमेश कुमार दीक्षित

श्री रमेश कुमार दीक्षित उत्तराखण्ड चारधाम यात्रा दिनांक 21 मई 2022 से 30 मई 2022 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए सम्मान से विभूषित किया जाता है, हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. : 1537/2021

क्रमांक-03 दिनांक: 11/01/2023

सम्मान पत्र



श्री अलेन्द्र कौशिक शर्मा

श्री अलेन्द्र कुमार शर्मा दक्षिण भारत की यात्रा एवं रामेश्वरम् धाम में संगीतमय भव्य श्री राम कथा दिनांक 24 दिसम्बर 2022 से 7 जनवरी 2023 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए सम्मान से विभूषित किया जाता है हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहें।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. : 1537/2021

क्रमांक-04 दिनांक: 15/07/2023

सम्मान पत्र



श्रीमति अनुपमा थापर

श्रीमति अनुपमा थापर गुरू पुर्णिमा के शुभ अवसर पर श्री अयोध्या धाम में संगीतमय भव्य श्री राम कथा दिनांक 02 जुलाई 2023 से 10 जुलाई 2023 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए सम्मान से विभूषित किया जाता है हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. : 1537/2021

क्रमांक-05 दिनांक: 18/08/2023

सम्मान पत्र



श्री पतिराम कश्यप

श्री पतिराम कश्यप पुरूषोत्तम मास के शुभ अवसर पर श्री बैकुण्ठ धाम बद्रीनाथ में संगीतमय भव्य श्रीमद भागवत कथा दिनांक 09 अगस्त 2023 से 15 अगस्त 2023 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. : 1537/2021

क्रमांक-06 दिनांक: 04/01/2024

सम्मान पत्र



श्री हरि बाबू गुप्ता

नये साल के शुभ अवसर पर श्री जगन्नाथपुरी धाम में संगीतमय भव्य श्रीमद भागवत कथा दिनांक 26 दिसम्बर 2023 से 01 जनवरी 2024 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए श्री हरि बाबू गुप्ता जी को सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

यात्रा एवं कथा में उत्कृष्ट सहयोग के लिए सम्मानित सदस्य गण

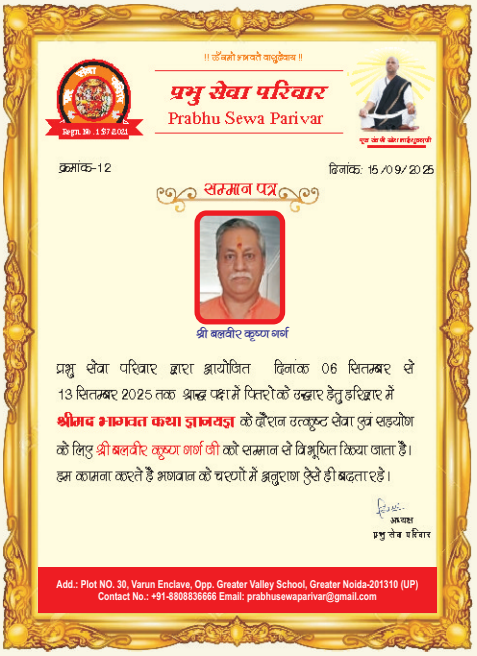












यात्रा एवं कथा में उत्कृष्ट सहयोग के लिए सम्मानित सदस्य गण

!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

क्रमांक-13 दिनांक: 20/10/2025

प्रशस्ति-पत्र

संगीतमय श्री राम कथा दिनांक 11 अक्टूबर से 19 अक्टूबर 2025 तक **श्री प्रेम प्रकाश शर्मा** द्वारा भरना जिला हापुड़ में आयोजन किया गया इस भव्य आयोजन के लिए प्रभु सेवा परिवार द्वारा सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।



श्री प्रेम प्रकाश शर्मा

राष्ट्रीय अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

क्रमांक-14 दिनांक: 06/11/2025

प्रशस्ति-पत्र

प्रभु सेवा परिवार द्वारा आयोजित दिनांक 26 अक्टूबर से 05 नवम्बर 2025 तक अयोध्या धाम में कार्तिक मास के शुभ अवसर पर **11 दिवसीय वाल्मिकी रामायण पर आधारित श्री राम कथा** के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए **डा. जी. सिंह जी** को सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।



डा. जी. सिंह

राष्ट्रीय अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

क्रमांक-15 दिनांक: 25/05/2026

प्रशस्ति-पत्र

प्रभु सेवा परिवार द्वारा आयोजित दिनांक 17 मई 2026 से 23 मई 2026 तक भगवान महाकाल की नगरी अवन्तिकापुरी (उज्जैन) में पुरुषोत्तम मास के शुभ अवसर पर **श्रीराम कथा** के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए **श्री राजेश त्रिपाठी जी** को सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है कि भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।



श्री राजेश त्रिपाठी

राष्ट्रीय अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

क्रमांक-16 दिनांक: 30/07/2026

प्रशस्ति-पत्र

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र धाम में प्रभु सेवा परिवार द्वारा आयोजित दिनांक 19 जुलाई 2026 से 29 जुलाई 2026 तक **श्रीमद् भगवत गीता चिंतन शिविर** के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए **श्री राजेन्द्र नाथ चौबे जी** को सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है कि भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।



श्री राजेन्द्र नाथ चौबे

राष्ट्रीय अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

Balance Sheet, Prabhu Sewa Parivar for the Year Ended 31 Mar 2026



Acknowledgement Number:534721900210926 Date of filing : 21-Sep-2026

INDIAN INCOME TAX RETURN ACKNOWLEDGEMENT

(Where the data of the Return of Income in Form ITR 1(SAHAJ), ITR-2, ITR-3, ITR 4(SUGAM), ITR-5, ITR-6, ITR-7 filed and verified)
(Please see Rule 12 of the Income tax Rules, 1962)

Assessment Year 2026-27

PAN AAETP8071E
Name PRABHU SEWA PARIVAR
Address Plot No-70 , Varun Enclave , Greater Noida , 31-Uttar Pradesh , 201310
Status 05-AOP/BOI Form Number ITR-7
Filed u/s 139(1)-On or before due date e-Filing Acknowledgement Number 534721900210926

Taxable Income and Tax Details

Current Year business loss, if any	1	0
Total Income	1A	0
Book Profit under MAT, where applicable	2	0
Adjusted Total Income under AMT, where applicable	3	0
Net tax payable	4	0
Interest and Fee Payable	5	0
Total tax, interest and Fee payable	6	0
Taxes Paid	7	0
(+) Tax Payable /(-) Refundable (6-7)	8	0

Accreted Income and Tax Detail

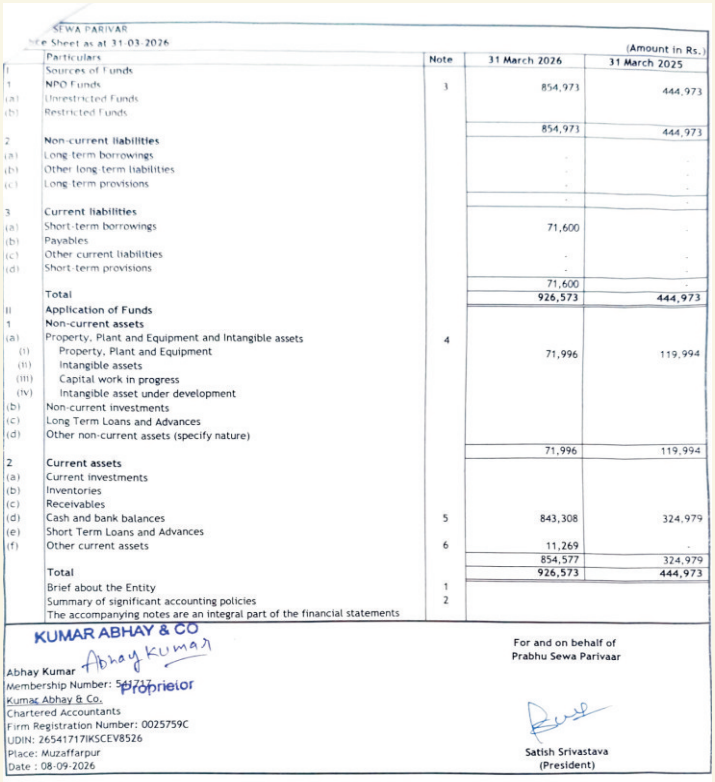
Accreted Income as per section 115TD	9	0
Additional Tax payable u/s 115TD	10	0
Interest payable u/s 115TE	11	0
Additional Tax and interest payable	12	0
Tax and interest paid	13	0
(+) Tax Payable /(-) Refundable (12-13)	14	0

Income Tax Return electronically transmitted on 21-Sep-2026 13:30:20 from IP address 122.183.41.197 and verified by Satish Srivastava having PAN AGSPS4382D on 21-Sep-2026 using paper ITR-Verification Form/Electronic Verification Code BBC7BA4NJI generated through Aadhaar OTP mode

System Generated Barcode/QR Code

AAETP8071E07534721900210926 4a530173ab6e0c6869e9909df51b2a79f21717b3

DO NOT SEND THIS ACKNOWLEDGEMENT TO CPC, BENGALURU



SEWA PARIVAR
Balance Sheet as at 31-03-2026

(Amount in Rs.)

	Particulars	Note	31 March 2026	31 March 2025
I	Sources of Funds			
1	NPO Funds	3	854,973	444,973
(a)	Unrestricted Funds			
(b)	Restricted Funds			
			854,973	444,973
2	Non-current liabilities			
(a)	Long term borrowings		-	-
(b)	Other long-term liabilities		-	-
(c)	Long-term provisions		-	-
			-	-
3	Current liabilities			
(a)	Short-term borrowings		71,600	-
(b)	Payables			
(c)	Other current liabilities		-	-
(d)	Short-term provisions		-	-
			71,600	
	Total		926,573	444,973
II	Application of Funds			
1	Non-current assets			
(a)	Property, Plant and Equipment and Intangible assets	4		
(i)	Property, Plant and Equipment		71,996	119,994
(ii)	Intangible assets			
(iii)	Capital work in progress			
(iv)	Intangible asset under development			
(b)	Non-current investments			
(c)	Long Term Loans and Advances			
(d)	Other non-current assets (specify nature)			
			71,996	119,994
2	Current assets			
(a)	Current investments			
(b)	Inventories			
(c)	Receivables			
(d)	Cash and bank balances	5	843,308	324,979
(e)	Short Term Loans and Advances			
(f)	Other current assets	6	11,269	-
			854,577	324,979
	Total		926,573	444,973
	Brief about the Entity	1		
	Summary of significant accounting policies	2		
	The accompanying notes are an integral part of the financial statements			

KUMAR ABHAY & CO
Abhay Kumar
Membership Number: 541717
Kumar Abhay & Co.
Chartered Accountants
Firm Registration Number: 0025759C
UDIN: 26541717IKSCEV8526
Place: Muzaffarpur
Date : 08-09-2026

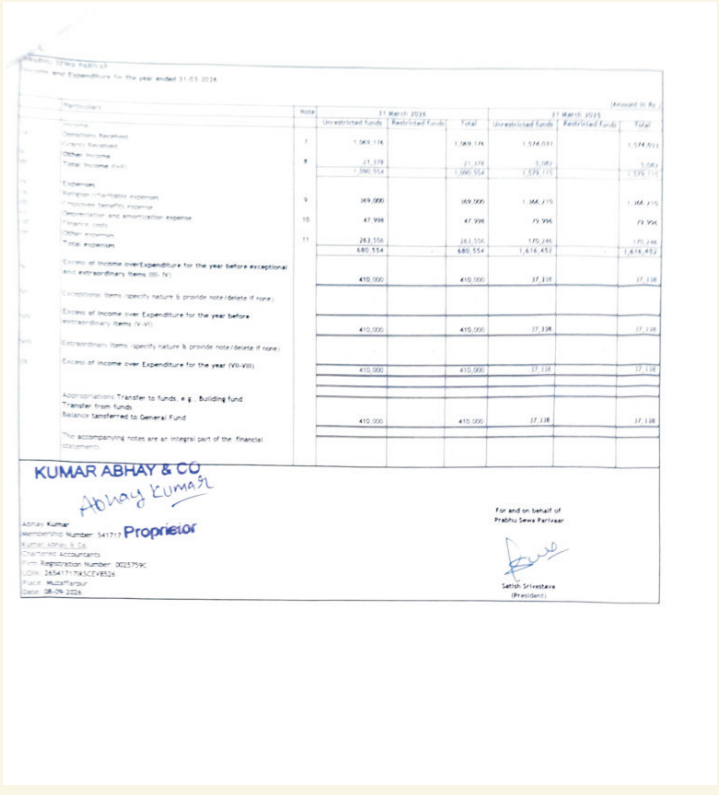
Proprietor

For and on behalf of
Prabhu Sewa Parivaar

Satish Srivastava
(President)



KUMAR ABHAY & CO
Abhay Kumar
Proprietor



KUMAR ABHAY & CO
Abhay Kumar
Proprietor

सदस्यता एवं सहयोग के लिए





प्रभु सेवा परिवार में वित्तीय वर्ष 2025–26 दान दाताओं के नाम

श्री उमेश मुरारीलाल चामरिया मुम्बई (महाराष्ट्र)	200000/–
डॉ. जी. सिंह बहराईच (उ.प्र.)	100000/–
सीशा ग्रीनटेक प्रा. लि. नोएडा (उ.प्र.)	33100/–
श्री मोहन सिंह फरीदाबाद (हरियाणा)	11000/–
श्रीमती सरोज महेश्वरी पटना (बिहार)	10000/–

प्रभु सेवा परिवार स्मारिका 2026 प्रकाशन में सहयोगियों के नाम

श्री आशुतोष श्रीवास्तव साहस इन्टरनेशनल प्रा. लि. ग्रेटर नोएडा (उ0प्र0)	21000/–
श्री राजेन्द्र नाथ चौबे लखनऊ (उ.प्र.)	2100/–
श्री सत्यप्रकाश राय प्रयागराज (उ.प्र.)	2100/–
श्री प्रेम प्रकाश शर्मा हापुड़ (उ.प्र.)	1100/–



प्रभु सेवा परिवार **M/s. ASV Risk Advisory & Corporate Consultants LLP** को उनकी उच्चतम सेवाओं के लिए विशेष आभार प्रकट करता है। हमारे प्रभु सेवा परिवार के लेखा–जोखा का प्रबंधन दक्षतापूर्वक कर रहे है। आशा करते है कि भविष्य में अपनी सेवायें देते रहेंगे।

प्रभु सेवा परिवार **M/s. ASV Risk Advisory & Corporate Consultants LLP** की सफलता की कामना करता है।



श्री चित्रगुप्त मन्दिर

चित्रांश सेवा ट्रस्ट

हैदरगंज अयोध्या कैन्ट

:: मार्गदर्शक ::

* श्री अविनाश चंद्रा अयोध्या
* श्री बलदाऊ जी लखनऊ
* श्री अरूण कुमार सिन्हा गाजियाबाद
* डॉ मीरा श्रीवास्तव अयोध्या
* श्री सतीश श्रीवास्तव ग्रेटर नोएडा
* श्री विजय प्रकाश श्रीवास्तव अयोध्या
* श्री ज्योतिपत राय अयोध्या

* यात्रियों के लिए धर्मशाला
* नि:शुल्क मेडिकल जांच
* ध्यान योग शिविर
* साधु सन्तों के लिए अन्न सेवा

इन प्रकल्पों में सहयोग हेतु

आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

CHITRANS SEVA TRUST
UPI ID : 8887131501@sbi



श्री के. सी. श्रीवास्तव, अध्यक्ष : चित्रांश सेवा ट्रस्ट, हैदरगंज अयोध्या कैन्ट, सम्पर्क सूत्र - 9868134870, 9868134876

प्रभु सेवा परिवार

Regn. No. 1537/2021



भूत पिशाच निकट नहीं आवे, महावीर जब नाम सुनावे,
नासे रोग हरे सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत वीरा।

श्रं SAAHAS



GEYSERS * AIR COOLERS * FANS * APPLIANCES

Celebrating 25 Years of Excellence

Saahas International Pvt. Ltd.